डॉ. अर्जुन चव्हाण,

एम्.ए., बी.एड., पीएच. डी.

प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

: संस्तुति :

मैं संस्तुति करता हूँ कि सुश्री. संगीता राजाराम नाईक का ''रेवतीसरन शर्मा के नाटकों का अनुशीलन'' लघु शोध - प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर ।

तिथि : २९ जून 2000

अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

डॉ. के. पी. शहा
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं
शोध-निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री नाईक संगीता राजाराम ने मेरे निर्देशन में "रेवतीसरन शर्मा के नाटकों का अनुशीलन" ("चिराग़ की लौं, अँधेरे का बेटा, न धर्म, न ईमान") लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है । जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही और मौलिक हैं । प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

शोध-निर्देशक

कोल्हापुर ।

तिथि : 29-6-2000

(डॉ. के. पी. शहा)

प्रख्यापन

''रेवतीसरन शर्मा के नाटकों का अनुशीलन'' (''चिराग़ की लौं, अँधेरे का बेटा, न धर्म, न ईमान'') लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई हैं ।

शोध-छात्रा

कोल्हापुर ।

तिथि : 29-6-2000

(सुश्री संगीता नाईक)